DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/08/2019 G-3/DL(N)/202/2016-18

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–3 अगस्त 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

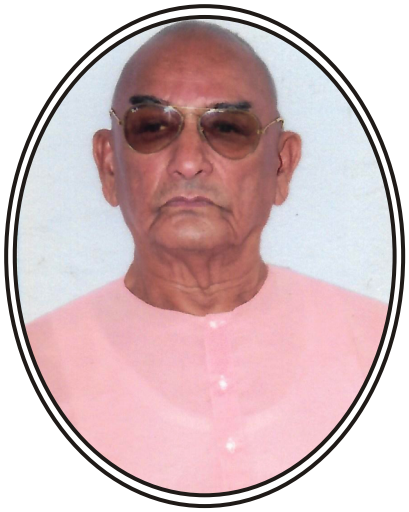

तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85
मो॰ : 9810344596, 011–27574151
ई–मेलः atmagyanp@gmail.co,
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. सन्त समागम से ही मनुष्य जन्म के उद्देश्य का पता चलता है।
2. अविनाशी गुरू की कृपा से ही साधक का योग सफल होता है।
3. योग साधन करने वाला निष्काम योगी पारदर्शी हो जाता है।
4. योगी सुष्मना नाड़ी से ब्रह्माण्ड में रमण करता है।
5. निष्काम विद्या से ही मानव जीवन संस्कारवान एवं आदर्शमय बनता है।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है

सम्पादकीय

रुहानी गुरू आनन्द के दाता शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

सन्त समागम से ही मनुष्य जन्म के उद्देश्य का पता चलता है।

दुर्लभ मनुष्य शरीर को प्राप्त करने के बाद भी मानव सत्य ज्ञान के अभाव में 'जप, तप, दान एवं देवताओं की पूजा को ही सर्वोत्तम मानकर उन्हीं में लगा रहता है सच्चे सन्त के बिना उसे यह समझाने वाला कोई नहीं मिलता है कि मानव जन्म का वास्तविक उद्देश्य क्या है? जब मानव के अनेक पुण्यों का उदय होता है, तब कहीं उसे सन्त समागम मिलता है और सच्चे सन्त के मुख से सत्यज्ञान की चर्चा सुनने को मिलती है। सनत समागम में आने पर ही उसे जप, तप, दान व देवताओं की पूजा के नाशवान फल का पता लगता है निरंतर सत्संग सुनने के बाद ही उसके अन्दर सत्य ज्ञान को जानने की जिज्ञासा प्रकट होती है तब वह पूर्ण श्रद्धा से ज्ञान को प्राप्त करता है। सत्य ज्ञान के अभाव में मानव के अन्दर अज्ञान रूपी कोहरा छाया रहता है जैसे सर्दी के दिनों में सूर्योदय से पूर्व सर्वत्र कोहरा छाया रहता है तो उस कोहरे में नज़दीक की वस्तु भी दिखायी नहीं देती है। वैसे ही मानव के अन्दर अज्ञान रूपी कोहरा छाया रहने के कारण उसे अपने नज़दीक रहने वाला परमपिता परमात्मा दिखायी नहीं देता है। जैसे सूर्य के निकलने पर धीरे–धीरे सारा कोहरा समाप्त हो जाता है तो सभी वस्तुएं स्पष्ट दिखायी देने लगती हैं, वैसे ही अपने अन्दर ब्रह्म सूर्य के प्रकट होने पर अज्ञान रूपी कोहरा मिट जाता है तो वह अपने अन्दर अपने आपको तथा अपने परमपिता को देख लेता है। इस संसार में जितनी भी शिक्षा ग्रहण की जाती है या जितनी भी डिग्रियाँ प्राप्त की जाती है वे सभी संसारी कार्यों को चलाने के काम आती हैं उन सबको प्राप्त करने के बाद भी अज्ञान अन्धकार को नहीं मिटाया जा सकता है। सन्तों के मुख से निकलने वाली अमृत वाणी को सुनकर मानव का अशान्त मन एकदम शान्त हो जाता है और उनके द्वारा दिया गया अध्यात्म ज्ञान मानव के अन्दर दया, निस्वार्थ प्रेम और आत्मा का अमृत प्रकट करता है तथा मानव के मन, बुद्धि व चित्त में भरे विकारों को मिटाकर जीवन को पवित्र बना देता है। जिस प्रकार से कीचड़ को कीचड़ से साफ नहीं किया जा सकता है बल्कि कीचड़ को साफ पानी से धोया जाता है उसी प्रकार जड़ प्रकृति के विकारों को जड़ प्रकृति की शक्तियों से नहीं मिटाया जा सकता है। उन्हें मिटाने के लिए चेतन शक्ति की आवश्यकता होती है। जड़ प्रकृति द्वारा जीवन में शुभ–अशुभ कर्मों की धूल निरन्तर पड़ती रहती है यह धूल अन्तःकरण को गन्दा कर देती है। आत्मा में छिपा अमृत ही जड़ प्रकृति की धूल को साफ कर सकता है तभी जीवन में पवित्रता आती है। इस सत्य ज्ञान की महत्ता इतनी अधिक है कि यह समुद्र के बराबर पाप को भी एक बूँद के समान कर सकता है जो मानव इस घोर कलियुग में इस सत्य ज्ञान से जुड़ेगा उसके लिए कलियुग भी सत्य युग में बदल जायेगा। सत्य ज्ञान का साधन करने वाले मानव पर संसार रूपी सर्प का ज़हर नहीं चढ़ सकता है जिसने इस अमृत ज्ञान को पा लिया वह मृत्यु को जीतने में भी समर्थ हो जाता है। यह सत्य ज्ञान आज के युग में तत्वदर्शी महात्मा जी श्री परमचेतनानन्द जी से "चेतनयोग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली–110085 में प्राप्त किया जा सकता है।

अविनाशी गुरू की कृपा से ही साधक का योग सफल होता है

अविनाशी गुरू की महान कृपा से मैंने अपने पूरे जीवन में योग साधन किया उन्हीं की कृपा से ही मुझे योग साधन में सफलता मिली है। इसी की जानकारी मैं समाज को दे रहा हूँ। भारतवर्ष एक अध्यात्म देश है। यहाँ हर युग में किसी न किसी योगी को अविनाशी गुरू की कृपा से योग सिद्ध करने में सफलता मिली है। आज के इस युग में मैने भी अविनाशी गुरू की कृपा से जीवन भर साधन करके सफलता प्राप्त की है आज मेरी उम्र 90 साल हो चुकी है ज्ञान हो जाने पर भी गुरू की कृपा को शीघ्र पहचान पाना सम्भव नहीं है बहुत वर्षो तक साधन करने के बाद मुझे सकाम व निष्काम जीवन की जानकारी मिली ज्ञान प्राप्ती के बाद यदि योग साधन सही रूप से नहीं किया जाता है तो सकामी जीवन निष्कामी नहीं बन सकता है। साधन करने के बाद ही सकाम निष्काम का भेद खुलता है। साधन करने के बाद ही मुझे ज्ञात हुआ कि हमारा वाँया स्वर सकाम तथा दाँया स्वर निष्काम है– सकाम का जन्म सृष्टि से हुआ है तथा निष्काम का जन्म ब्रह्माण्ड से हुआ है। यहाँ पर एक शक्ति ब्रह्माण्ड तक तथा दूसरी शक्ति पृथ्वी तक पहुँच रही है इसके संगम से हमारा जीवन बना है। योगी जब योग साधन करता है तो वह साधन से सकाम को भी निष्काम बना देता है इस प्रकार सकाम जीवन में उत्पन्न होने वाली ऋद्धि–सिद्धियाँ लाचार होकर निष्काम में समर्पित हो जाती हैं सकाम जीवन में होने वाला ऋद्धि–सिद्धियों का चमत्कार समाप्त हो जाता है। जब तक अविनाशी परमात्मा गुरू नहीं मिलते हैं तब तक पूरा भेद नहीं खुलता है। गुरू कृपा से ही संसारी लोगों द्वारा की गई साधना का भी मुझे पता चला है कि उनकी साधना निष्काम तक पहुँच ही नहीं पायी है। उनकी साधना सिद्धियों तक ही सीमित थी। गुरू कृपा से मेरा सुमिरन दोनों स्वरों से हुआ बाँया स्वर भी दाँया स्वर में शामिल हो गया। सकाम स्वर की जड़ पृथ्वी से टूट गयी तो सकाम खत्म हो गया। इस प्रकार जब दोनों स्वर एक साथ मिले तो सहज में ही मोक्ष मिल गया और मैं ज्ञान द्वार के अन्दर चला गया। इसे मैंने खुद देखा है। मैं 90 वर्ष की उम्र में भी निरन्तर साधन व सत्संग करता रहता हूँ। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी यदि निरन्तर साधन नहीं किया जाता है तो सकामी जीवन निष्कामी नहीं बन सकता है। अविनाशी गुरू हर युग में रहते हैं आज के युग में अविनाशी गुरू मेरे अन्दर प्रकट रूप में हैं। उनके माध्यम से ही मैं इस ज्ञान को समाज में देता हूँ। इस अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त कर साधन भजन करके लोग मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं तथा सकामी जीवन

को निष्कामी बना सकते हैं। परमात्मा गुरू ही इस कार्य को करने में समर्थ है शरीरी गुरू की पहुँच वहाँ तक नहीं होती है जो सकामी जीवन को निष्कामी बना सके शरीरी गुरू तो स्वयं सकामी होते हैं। केवल परमात्मा गुरू ही निष्कामी है इसलिए वे ही सकामी जीवन को निष्कामी बना सकते हैं। निष्कामी गुरू मेरे अन्दर प्रकट रूप में हैं इसलिए जिन्हें ज्ञान दिया जायेगा उनके गुरू भी निष्कामी परमात्मा होंगे। मैं आज भारतवर्ष को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को सूचना दे रहा हूँ कि मनुष्य जीवन में दुर्लभ इस ज्ञान को प्राप्त करो जो भी मानव इस ज्ञान को प्राप्त करेगा उसका सौभाग्य जागेगा। आज कलियुग कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो इस ज्ञान से मानव के अन्दर अवश्य ही परिवर्तन आयेगा। अविनाशी ज्ञान के प्रभाव से संसारी प्रभाव समाप्त हो जायेगा। निष्काम कर्मयोगी को कलियुग का प्रभाव भी विचलित नहीं कर सकता है। इस निष्काम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए "चेतन योग मोक्षधाम" सैक्टर–11, रोहिणी दिल्ली में रविवार को सत्संग श्रवण करे ज्ञान प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाने का प्रयास करें।

भजन

अविनाशी गुरू के निष्काम ज्ञान से, निस्वार्थ प्रेम जागेगा।
जीवन की इस फुलवारी में, अमृत खुशबु महकेगा।।
मानुष जन्म अनमोल मिला, पर गुरू ज्ञान न मिल पाया।
ज्ञान मिले तो सफल हो जीवन, हट जाय जग की सब माया।।
अविनाशी गुरू प्रकट हो जा, जगमग ज्योति जागेगा। जीवन की.....
सकामी मन निष्कामी हो जा, निश दिन साधन करना है।
गुरू आज्ञा को सिर पर धरकर, निष्कामी सेवक बनना है।।
साधन सेवा सत्संग से ये, द्वैत का पर्दा टूटेगा। जीवन की....
लाखों दिव्य शक्तियाँ जागें, चहु दिशि उजियारा है।
अलौकिक धुन में अनहद गरज़े, बहती अमृत धारा है।।
अनन्त सूरज चन्दा चमकैं, रिमझिम वर्षा बरसेगा। जीवन की....
चेतन सन्त जी ने ज्ञान जगाकर, अनन्त किया उपकारा है।
काल यम का भय मिटाकर, दिखाया मोक्ष द्वारा है।।
सत्य सेवक गुरू कृपा से, जीवन में उजाला चमकेगा। जीवन की....

योग साधन करने वाला निष्काम योगी पारदर्शी हो जाता है

निरन्तर योग साधन करने वाला साधक स्वर में होने वाले शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करता हुआ अपने अन्दर प्रवेश करता है। वह नाभि से दोनों स्वरों को एक साथ उठाकर ऊपर ज्ञान चक्र की ओर ले जाता है जहाँ ब्रह्म की चार धाराओं का समावेश होता है। ब्रह्म की इन चार धाराओं को शब्द ब्रह्म, ब्रह्म नाद, ब्रह्म प्रकाश एवं अमृत ब्रह्म कहा जाता है। शब्द का सुमरन करने से अनेक विघ्नों का नाश होता है और परमात्मा से जीवन की नज़दीकी बढ़ती है ब्रह्म प्रकाश से मोह अन्धकार दूर होता है। ब्रह्म नाद सुनने से अचेतना में चेतना आ जाती है। अमृत से मृत्यु रोग समाप्त होता है जिससे साधक के अन्दर ज्ञान वैराग्य बढ़ता है। साधक नश–नाड़ियों की गन्दी हवा को बाहर निकाल कर शरीर का सन्तुलन उसके सभी आन्तरिक विकार जलकर नष्ट हो जाते हैं उसका अन्तःकरण पवित्र हो जाता है इस प्रकार वह शीशे की भांति पारदर्शी हो जाता है वह बाहर व भीतर से एक समान हो जाता है। साधक योग साधन करता हुआ शब्द में सुरति जोड़कर परमात्मा से अपनी नज़दीकी महसूस करता है इसलिए कहा गया है–

साधन भजन करने से अन्दर रही न रेख।
मनसा, वाचा कर्मणा, सन्त साहिब एक।।

योग साधन करने वाला योगी समाधि सुख का अनुभव करता है। यद्यपि योग साधन करने वाले साधक पर भी बाहरी जलवायु, शरीर रचना एवं आहार–व्यवहार का प्रभाव पड़ता है परन्तु जिस साधक की परमात्मा में प्रबल धारणा होती है वह ब्रह्म चरित्र का पालन करता हुआ अपने आचरण चरित्र से ऊँचा उठकर संसार की समस्त मर्यादाओं को लांघकर परमात्मा की सनातन मर्यादा के अनुसार शब्द में सुरति जोड़कर साधन करता है ऐसे योगी के अन्दर ओज शक्ति उसी प्रकार पैदा हो जाती है जिस प्रकार पत्थरों में शिलाजीत पैदा हो जाती है। योगी ब्रह्म सूर्य के प्रकाश में अनेक अलौकिक रूहों का खेल देखता है उसकी जीवन नगरी में ब्रह्म वर्षा निरन्तर बरसती रहती है जिससे उसके जीवन में खुशहाली छा जाती है वह ज्ञान अवस्था को प्राप्त कर कभी विचलित नहीं होता है। ऐसा निष्काम योगी

समाज में जिज्ञासुओं को सत्संग सुनाकर ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराते हैं। योगी समाधि–सुख का अनुभव कर समाधि से उतरने के बाद भी निरन्तर साधन भजन करते हैं क्योंकि जड़ प्रकृति में रहने व भोजन आदि करने से उनके ऊपर भी जड़ प्रकृति का प्रभाव उसी प्रकार पड़ता रहता है जैसे स्वच्छ कपड़े पर बाहरी धूल पड़ती रहती है और उसे धीरे–धीरे गन्दा कर देती है तो उस कपड़े को पुनः धोना पड़ता है। योगी भी जब समाज में जाता है तो उस पर भी समाज के वातावरण का प्रभाव पड़ता है उस प्रभाव को योगी साधना करके हटा देता है फिर वह उसी प्रकार शुद्ध व पवित्र बना रहता है जैसे हवा सुगन्ध–दुर्गन्ध को उठाकर भी स्वयं पवित्र बनी रहती है। योगी को अन्तिम श्वांस तक योग साधना में लगे रहना चाहिए साधन करने से ही योगी सुख–दुख के द्वन्द से रहित हो सकता है। निरन्तर योग साधन करने वाला निष्काम योगी ही पारदर्शी हो जाता है।

भजन

अलौकिक शक्ति योग साधन से, प्रकट जब हो जाती है।
साधक के जीवन के अन्दर, एक नयी क्रांति लाती है।।
ज्ञान की ज्योति घट के अन्दर, बिजली सी चमकाती है।
अविनाशी गुरू से मिली प्रेरणा, मेरे मन को लुभाती है।।
रिमझिम–रिमझिम अमृत वर्षा, ब्रह्म सागर से आती है।
सेवक के जीवन के अन्दर, जीवन प्यास बुझाती है।।
गुरू की प्रेरणा ही योगी को, पारदर्शी बनाती है।
सत्संगत में गुरू सेवक को, हर्ष–हर्ष हर्षाती है।।
गुरू की वाणी गुरू सेवक में, निस्वार्थ प्रेम जगाती है।
चेतन वाणी सुनो रे प्राणी, जीवन मुक्त बनाती है।।

योगी सुष्मना नाड़ी से ब्रह्माण्ड में रमण करता है

आज मैं सभी प्रेमी पाठकों को साधन के विषय में जानकारी दे रहा हूँ। इस मानव शरीर में अनेक प्रकार की नश–नाड़ियों का जाल बिछा है इन नाड़ियों में इंगला, पिंगला एवं सुष्मना नाड़ी प्रमुख हैं। इनमें इंगला दांया स्वर में तथा पिंगला बांया स्वर में स्थित है इन दोनों नाड़ियों का सम्बन्ध पिण्ड अर्थात शरीर तक होता है। सुष्मना नाड़ी इंगला व पिंगला के मध्य में होती है जिसका सम्बन्ध ब्रह्माण्ड तक होता है। जब साधक साधन करता हुआ इंगला पिंगला को पार कर जाता है तब उसकी पहुँच यहाँ से ब्रह्माण्ड तक हो जाती है। सुष्मना नाड़ी के अन्दर जो शक्ति होती है उस शक्ति का विकास जब साधक निरन्तर साधन करता हुआ कर लेता है तब वह प्रकृति से ऊपर उठकर ब्रह्माण्ड तक पहुँच जाता है। इस प्रकार योगी सुष्मना नाड़ी से ब्रह्माण्ड में रमण करता है उसके सारे स्वर खुल जाते हैं वह ब्रह्माण्ड से रमण करके संसार में भी आता है। साधक सुष्मना से ब्रह्माण्ड तक जाने का रास्ता बना लेता है। ब्रह्माण्ड तक जाने वाली वह शक्ति जब ज्ञान का अमृत, दया व प्रेम भरकर वापस संसार में आती है तो सन्त के अन्दर कार्य करना प्रारम्भ कर देती है और उसका प्रभाव पैरो तक पहुँच जाता है। इस प्रकार योग साधन से योगी शरीर से छूटकर ब्रह्माण्ड तक पहुँचता है। योगी ब्रह्माण्ड से उतरकर जब संसार में आता है तब उसके अन्दर योग बल बढ़ जाता है। उसके अन्दर साधन करने से योग हवा प्रकट हो जाती है वह योग हवा संसारी दूषित हवा को खारिज़ कर देती है। इस दूषित हवा में प्रकृति का प्रभाव अधिक रहता है। साधन करने से योगी के अन्दर योग अग्नि प्रकट हो जाती है जो प्रकृति के प्रभाव को जलाकर नष्ट कर देती है इस प्रकार योगी पूर्णरूप से शुद्ध हो जाताहै। उसके मन, बुद्धि चित्त में भरे सभी विकार नष्ट हो जाते हैं और उसके अन्दर निस्वार्थ भावना प्रकट हो जाती है वह पूर्णरूप से निष्कामी बन जाता है उसकी सारी सकाम, भावना समाप्त होकर संसार कल्याण की भावना ही शेष रह जाती है। इसी से वह समाज के लोगों के साथ रहता हुआ सत्संग भी करता है और संसारी कर्म करता हुआ भी संसार से उपरत रहते हुए ब्रह्माण्ड में ही रमण करता है। बाहर से योगी के योग बल को नहीं पहचाना जा सकता है उसके योग बल की जानकारी उसके सत्संग से मिलती है। इस भारत वर्ष में योगी महात्मा समय–समय पर आते रहते हैं इसलिए सारे संसार में भारत भूमि की प्रशंसा की जाती है यह भारतवर्ष ज्ञान का सदन एवं ऋषियों–मुनियों का भवन कहा जाता है देवता भी भारत भूमि के गीत गाते हैं और भारत भूमि में जन्म लेकर अपने उद्धार की प्रार्थना परमात्मा से करते हैं। सन्त की महानता ज्ञान से ही समझ में आती है। अधोगति से बचने के लिए सन्त शरण में पहुँचना ही सर्वोत्तम मार्ग है।

निष्काम विद्या से ही मानव जीवन संस्कारवान एवं आदर्शमय बनता है

भारत को संसार के सभी राष्ट्रों में आदर्श राष्ट्र माना जाता है यह आदर्श राष्ट्र निष्काम–विद्या अर्थात् अध्यात्म विद्या से ही बना है। कोई भी व्यक्ति आदर्श एवं संस्कारवान निष्काम कर्म का योग साधन सिखाने वाली निष्काम विद्या अर्थात् अध्यात्म विद्या से ही बन सकता है। इस विद्या का बोध तत्वदर्शी सन्त के सान्निध्य में बैठकर ही किया जा सकता है। जीवन को पवित्र बनाने वाली अध्यात्म विद्या से ही जीवन में पवित्र विवेक उपजता है। जब बच्चा इस संसार में आता है तो उसे सबसे अधिक माता का सम्पर्क मिलता है। कुछ समय बाद वह पिता के सम्पर्क में रहकर बड़ा होता है पिता उसे भौतिक भिक्षा ग्रहण करने के लिए स्कूल में भेजता है। यह भौतिक विद्या सकाम होती है इसका प्रभाव बच्चे के मन, बुद्धि एवं चित्त पर पड़ता है इस विद्या से वह संसारिक कार्यों में रूचि लेने लगता है उसका जीवन सकाम भावनाओं से ग्रसित हो जाता है वह मन बुद्धि की सीमा में ही बंधा रहता है। उसके अन्दर पवित्र संस्कार नहीं बन पाते हैं। परन्तु यदि उसे समय के सच्चे सन्त से निष्काम विद्या का ज्ञान हो जाये तो उसके अज्ञान अन्धकार से भरे जीवन में ज्ञान का सवेरा हो जाता है उसकी ज्ञान दृष्टि खुल जाती है, वह ब्रह्म सूर्य के उजाले में अध्यात्म जगत हो देखता है निष्काम ज्ञान से उसके आन्तरिक शत्रु काम, लोभ, मोह आदि पनप नहीं पाते हैं उसकी चित्त वृत्तियों का निरोध होने लगता है उसका पवित्र विवेक निरन्तर बढ़ने लगता है, उसका मन जो सकाम कर्म संस्कारों से घिरा था वही सुमरन साधन से सकाम कर्म संस्कारों को मिटाने लगता है उसके अन्दर निष्काम कर्म संस्कार बनने लगते हैं जिससे मानव का भीतरी जीवन पूर्ण संस्कारवान एवं आदर्शमय बन जाता है। मानव ब्रह्म चरित्र का पालन करते हुए अपने आचरण एवं आदर्श का सन्देश जन–जन तक पहुँचाता है इस प्रकार हमारे संस्कारवान एवं आदर्शमय बनने की प्रक्रिया अन्दर से प्रारम्भ होकर बाहर व्यवहार में भी प्रकट होने लगती है आन्तरिक निष्काम संस्कारों से ही हमारा भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन सन्तुलित होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि अध्यात्म

विद्या ही वह निष्काम एवं राजविद्या है जिसे समय के सच्चे तत्वदर्शी सन्त से प्राप्त करके हम अपने जीवन को आदर्शमय, संस्कारवान एवं सार्थक बना सकते हैं इस विद्या से ही हम एक आदर्श नागरिक कहलाने के अधिकारी होंगे। जिस राष्ट्र में निष्काम विद्या को प्राप्त करके आदर्श नागरिक होंगे वहीं राष्ट्र सभी राष्ट्रों में आदर्श राष्ट्र होगा। भारत में ऐसे सन्त हमेशा रहते हैं जिन्होंने इस निष्काम अध्यात्म विद्या से अनेक जीवात्माओं को संस्कारवान, एवं आदर्श नागरिक जीवन जीने की कला सिखाई है। ऐसे सन्त ही परमात्मा के सच्चे एवं निस्वार्थ सेवक होते हैं।

भजन

अध्यात्म ज्ञान के सागर में, सन्तों ने खोज लगाया है।
साधन करके अपने अन्दर, निष्काम विद्या को पाया है।।
अध्यात्म ज्ञान के अमृत को, मानव को पिलाया है।
सच्चे सन्त ने मृत्युरोग से, मानव को बचाया है।।
सन्तों ने नित साधन करके, प्रेम ख़ज़ाना पाया है।
मानव के जीवन के अन्दर, निस्वार्थ प्रेम जगाया है।।
अध्यात्म ज्ञान के दर्पण में, निज स्वरूप को दिखलाया है।
अध्यात्म ज्ञान के साधन से, निष्काम योगी कहलाया है।।
चेतन सन्त ने गुरू कृपा से, आत्म तत्व को पाया है।
मानव जीवन के अन्दर, ज्ञान प्रकाश जगाया है।।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

(आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 28.07.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11,में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए।) सत्संग में महात्मा जी ने प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए समझाया कि समाज में सकाम् कर्मो से जुड़ा व्यक्ति अनेक अनैतिक कार्यों को करता रहता है जब तक मानव को निष्काम कर्म का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह अनीति पूर्ण कार्यों को करने से नहीं बच सकेगा। निष्काम ज्ञान से मानव जीवन आदर्शमय बनता है वह गुरू के निस्वार्थ प्रेम को निष्काम ज्ञान से मानव जीवन आदर्शमय बनता है वह गुरू के निस्वार्थ प्रेम को निष्काम ज्ञान से ही प्राप्त कर सकता है। आज के अशान्त मानव को निष्काम ज्ञान से ही पूर्ण शान्ति मिल सकती है। प्रेमी केन्द्रो से आये प्रेमियों ने भी ज्ञान की महिमा में अपने विचार व्यक्त किये। आरती के बाद प्रसाद वितरण होने पर सत्संग की समाप्ति हुई।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में प्रकाशित तत्वदर्शी महात्मा के प्रवचना घर–घर शान्ति का सन्देश पहुँचा रहे हैं उन्हें पढ़कर मन में आने वाले कलुषित विचार क्षीण हो जाते हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह पत्रिका अवश्य पढ़नी चाहिए।

– राजीव सिंघल, शामली रोड़ (मु. नगर)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में साधना की विधि एवं सेवा के महत्व को पूर्णरूप से समझाया गया है। साधना के द्वारा चित्त की वृत्तियों के निरोध सरलता से हो जाता है।

– सज्जन कुमार ग्राम–छुर (मेरठ)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका पढ़कर एवं अध्यात्म ज्ञान से जुड़े प्रेमियों का सत्संग सुनकर मेरे जीवन की धारा बदल गई मुझे महात्मा जी ने तत्वज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराया। अपने अन्दर अनहद नाद को सुनकर मैं तन की सुधि विसरा गया। ज्ञान के ये क्षण मुझे हमेशा याद रहेंगे।

– प्रमोद कुमार, खाईखेडी (मु. नगर)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में दिये गये प्रवचनों में साधन, सेवा तथा सत्संग पर विशेष बल दिया गया। इनके बिना आन्तरिक शुद्धि नहीं हो सकती है ये तीनों ही अध्यात्म मार्ग के स्तम्भ हैं।

– हंसराज, सैक्टर–52 (नोयड़ा)

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 28.07.2019 दिन रविवार को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11,में तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के तत्वाधान में किया गया। इसमें दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों के विभिन्न केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी
मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण